International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 18-22

रीवा संभाग में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की सामाजिक अभिप्रेरक पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

[1] पुष्पराज सिंह [2] डॉ. जय सिंह

[1] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

शिक्षा–मानवीय जीवन के विभिन्न साध्यों को प्राप्त करने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा मानव के विकास की कुंजी है, इसलिए जब बालक शिक्षा ग्रहण करता है तो उसे अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी दोनों क्षेत्रों के विकास की आवश्यकता होती है। अन्तर्मुखी विकास के बल पर वह अपने ज्ञान को बढ़ाता है और बहिर्मुखी धरातल पर वह अपने अनुभव का चातुर्दिक विकास करता है। इसी ज्ञान एवं अनुभव के सामंजस्य पर ही बालक व्यवहारकुशल बनकर अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करता है।

इस शोध पत्र के माध्यम से शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की सामाजिक अभिप्रेरक पर पड़ने वाले प्रभाव की वर्तमान स्थिति तथा उनमे आने वाली कठिनाइयों का आंकलन किया गया है। शोध क्षेत्र में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्मसंप्रत्यय का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है और शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में भी कोई सार्थक अन्तर नही है।

मूल शब्दः रीवा संभाग, शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय, छात्र, सामाजिक अभिप्रेरक।

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। यदि किसी भी व्यक्ति को जीवन में सफलता प्राप्त करनी है, तो शिक्षा उसके लिए अति आवश्यक है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है।

शिक्षा एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, जो जन्म से लेकर मृत्यु–पर्यन्त चलती है। शिक्षा व्यक्ति को एक फूल की भॉति विकसित होने में सहायता करती है, जो अपनी सुगन्ध वातावरण में चारों ओर फैलाता है। लोके के शब्दों में भी स्पष्ट है– "पौधे कृषि से विकसित होते हैं, और मनुष्य शिक्षा से।"

मॉ के गर्भ से ही बच्चे की शिक्षा प्रारम्भ हो जाती है। शिक्षा की प्रक्रिया जो मानव को अपने वातावरण में सफल बनाती है, वह जीवन पर्यन्त चलती रहती है।

प्राचीन शिक्षा पद्धति में समय के साथ परिवर्तन हुए और यह विद्यालयीन शिक्षा व्यवस्था आते ही शासनकाल में स्वरूप में आई। इस नई शिक्षा प्रणाली के अभ्युदय के साथ ही भारतीय शिक्षा का अन्त हो गया। शिक्षा पर राज्य का नियंत्रण बढ़ता गया तथा इसका स्वरूप अपेक्षाकृत संकुचित हो गया। इसमें पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम, समय सीमा, भौतिक एवं मानवीय संसाधनों के सुनियोजित व्यवस्थापन के बालको के विकास का लक्ष्य रखा गया है। 19 वीं शताब्दी के अंत होते–होते भारत में अतंतकाल से चला आने वाली देशी शिक्षा संगठन नष्ट होकर सदा के लिए विलुप्त हो गया। विद्यालयों के लिए विभागीय मान्यता के साथ ही शासकीय हस्तक्षेप और भी बढ़ गया।

भारत में शिक्षा को संगठित रूप दिए जाने के लिए स्वतंत्र भारत में कई समितियों एवं आयोगों की नियुक्तियाँ की गई। देश की नवीन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसकों निर्धारित करने के लिए विश्वविद्यालय शिक्षा के लिए सन् 1949 में डॉ. राधाकृष्णन कमीशन, माध्यमिक शिक्षण के लिए सन् 1880 में मुदालियर आयोग तथा सन् 1964 में कोठारी आयोग की नियुक्ति हुई। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् शिक्षा प्रसार के नाम माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में व्यापक वृद्धि हुई किन्तु शिक्षा में गुणात्मक समानतों की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया गया। हमारी माध्यमिक शिक्षा प्रणाली स्वतंत्र भारत की आकांक्षाओं एवं आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं मानी जाती है। आत का दौर शिक्षा को आत्मिक विकास की तुलना के भौतिक उपलधियों का साधन है।

स्वामी जी ने शिक्षा की एक ऐसी पद्धति की प्रतिस्थापना की जो भारत की सभ्यता, संस्कृति और परम्पराओं के अनुरूप थी, जिसमें प्राचीन विधाओं के अध्ययन के साथ–साथ ज्ञान–विज्ञान के अध्ययन को भी समुचित स्थान दिया गया। स्वामी जी का पावन स्पर्श जो विद्या समाज के एक वर्ग तक सीमित रहती थी, वह समाज के सम्पूर्ण वर्ग का प्रतिनिधित्व करने लगी, जिसके परिणाम स्वरूप सबको शिक्षा प्राप्त करने का समान अवसर मिलने लगा और प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति के समुचित स्तर को प्राप्त करने लगा।

भारत की परम् पावन वसुंधरा पर अनेक महापुरूषों का समय–समय पर अविर्भाव हुआ, जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से भारत का मस्तक ऊँचा उठाया। महात्मा गौतम बुद्ध, महात्मा गाँधी, महर्षि अरविन्द, रविन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानन्द आदि अन्यान्य महापुरूषों ने अपने–अपने ढंग से मानव का पथ–प्रदर्शन किया है, और जीवन को विभिन्न दिशाओं में प्रगतिशील बनाया है।

इस दिशा में स्वामी विवेकानन्द जी एक क्रान्तिकारी एवं युग दृष्टा पुरूष के रूप में अवतरित हुए। मानव जीवन का प्रत्येक वैयक्तिक एवं सामाजिक पहलू उनसे अछूता नहीं रहा है, जिसके सम्बन्ध में विकास के सभी उपायों की मीमांसा उनके लेखों, व्याख्यानों और कार्यों में हम पाते हैं। स्वामी विवेकानन्द अपनी शिक्षा व्यवस्था से केवल तत्कालीन शिक्षा की विकृतियों को ही दूर करना नहीं चाहते थे, अपितु इसके द्वारा सम्पूर्ण दुनियाँ में एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे, जो समता, स्वतंत्रता, औचित्य और न्याय पर आधारित हो।

2. अध्ययन की आवश्यकता

अध्ययन के द्वारा शैक्षणिक दृष्टि से अल्प विकशित रीवा संभाग के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्रों की आत्मसंप्रत्य एवं

उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की समीक्षा की जाएगी, वहीं दूसरी ओर इसमें आने वाली कठिनाइयों की जानकारी प्राप्त की जाएगी तथा इन्हें सशक्त बनाने के लिए अपने शोध कार्य में वास्तविक स्थिति का विश्लेषण कर सशक्त प्रभावी सुझाव प्रस्तुत कर सकेगा जिनका उपयोग न केवल शोध क्षेत्र में अपितु सम्पूर्ण देश में शिक्षा के विकास हेतु किया जा सकेगा।

3. शोध की परिकल्पनाएँ

"परिकल्पना एक विचार युक्त कथन है जिसका प्रतिपादन किया जाता है और अस्थायी रूप से सही मान लिया जाता है और निरीक्षण प्रदत्तों के आधार पर व्याख्या की जाती है, जो आगे शोध कार्यों को निर्देशन देता है।"[1]

– जान डब्ल्यू वेस्ट

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है:–

1. शासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में सामाजिक अभिप्रेरकों का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. अशासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में सामाजिक अभिप्रेरक का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

4. उद्देश्य

- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों में सामाजिक अभिप्रेरक का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाना।
- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के मार्ग में आने वाली समस्याओं व अवरोधों को ज्ञात करना।
- समस्याओं के निदान हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र रीवा संभाग है। इसके अन्तर्गत 4 जिले – रीवा, सतना, सीधी व सिंगरौली हैं। अतः संभाग अन्तर्गत स्थित शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित है।

6. अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध कार्य के संपादन हेतु शोधार्थी ने निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया है–

1. समान्तर माध्य –

संकलित प्रदत्तों के औसत मान को समान्तर माध्य कहते हैं।

समान्तर माध्य त्र प्रदत्तों का योग/प्रदत्तों की संख्या

शोधार्थी ने अपने शोध कार्य के संपादन हेतु समान्तर माध्य ज्ञात करने की लघु रीति का प्रयोग किया है।[2] इस विधि के अनुसार–

समान्तर माध्य या औसत $M = Am + \frac{\Sigma fd}{\Sigma f} \times i$

जहाँ $M =$ प्रदत्तों का औसत, $Am =$ कल्पित माध्य, $f =$ प्रदत्तों की आवृत्ति, $d = (x - Am)/i$ तथा $i =$ वर्गान्तर

मानक विचलन –

मानक विचलन $(\sigma) = \frac{i}{N}\sqrt{N \times \Sigma fd^2 - (\Sigma fd)^2}$

जहॉं $N = \Sigma f =$ आवृत्तियों का योग

2. **t– परीक्षण –**

(a) **दो बड़े स्वतंत्र समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की जॉंच** – जब प्रतिदर्शों का आकार 30 या 30 से अधिक होता है, तो उनके मध्यमानों की अंतर की जांच क्रांतिक अनुपात द्वारा की जाती है। क्रांतिक अनुपात की गणना निम्न सूत्र द्वारा की जाती है–

C.R. या

$$t = \frac{M_1 \sim M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}}$$

जहॉं $M_1 =$ पहले का समान्तर माध्य

$M_2 =$ दूसरे का समान्तर माध्य

$N_1 =$ पहले समूह का आकार

$N_2 =$ दूसरे समूह का आकार

$\sigma_1 =$ पहले समूह का मानक विचलन

$\sigma_2 =$ दूसरे समूह का मानक विचलन

(b) **दो बड़े स्वतंत्र समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की जॉंच** – जब प्रतिदर्श का आकार N का मान 30 से कम है तो ऐसे समूह को छोटा समूह कहते हैं। छोटे समूह में $C.R.$ के स्थान पर t की गणना की जाती है। t की गणना निम्नलिखित सूत्र द्वारा की जाती है–

$$t = \frac{M_1 \sim M_2}{\sqrt{\left(\frac{\Sigma d_1^2 + \Sigma d_2^2}{N_1 + N_2 - 2}\right)\left(\frac{N_1 + N_2}{N_1 N_2}\right)}}$$

जहॉं $\Sigma d_1^2 =$ प्रथम प्रतिदर्श के प्रदत्तों के अपने मध्यमान से विचलनों के वर्गों का योग

$\Sigma d_2^2 =$ द्वितीय प्रतिदर्श के प्रदत्तों के अपने मध्यमान से विचलनों के वर्गों को योग

$M_1 =$ प्रथम प्रतिदर्श का समान्तर माध्य

$M_2 =$ द्वितीय प्रतिदर्श का समान्तर माध्य

$N_1 =$ प्रथम प्रतिदर्श का आकार

$N_2 =$ दूसरे प्रतिदर्श का आकार

---

[1] सरीन डा. शशिकला एवं सरीन डा. अंजली– शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2 नवीनतम संस्करण 1998 पृष्ठ संख्या– 82

[2] गुप्ता एस.सी.कपूर व्ही, के., फण्डामेन्टलऑफ स्टेटिस्टिक्स, सुल्तान चंद एण्ड संस (1992 संस्करण) 23 दरियागंज नई दिल्ली।

न्यादर्श का आकार 30 से कम होने पर t – परीक्षण के लिए निम्नलिखित सांख्यिकीय सूत्र का भी प्रयोग किया जा सकता है। जहाँ प्रतीकों के सामान्य अर्थ हैं।

$$t = \frac{M_1 \sim M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1-1}+\frac{\sigma_2^2}{N_2-1}}}$$

समष्टि व प्रतिदर्श : इस अध्ययन की समष्टि समष्टि में रीवा संभाग के 04 जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों से 10 ग्रामीण व 10 शहरी विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 160 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 बालक एवं 10 बालिकाएं कुल 1600 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से शोधार्थी ने अपने शोध के लिये चुना है।

7. शोध उपकरण :

शोधकर्त्ता ने शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय पर विद्यार्थियों के आत्मसंप्रत्यय एवं उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने हेतु **डॉ. ए.के.पी. सिन्हा तथा डॉ. आर.पी. सिंह के द्वारा निर्मित Adjustment Inventory for School Students समायोजन मापनी** का प्रयोग किया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में छात्रों की आत्मसंप्रत्यय एवं उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – ओल्पोर्ट, जी.डब्ल्यू. (1937) [1] व खान, प्रो. एस. एच. और श्रीमती शुक्ला भट्टाचाय (1987) [2], कौल लोकेश (1998) [3], मूज, आर. (1964) [4], थोर्प, एल.वी. और सैमुलर, ए.एम. (1965) [5] -

9. प्रदत्त संकलन विधि

प्राथमिक तथ्य सामग्री के संकलन हेतु प्रत्यक्ष साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से एवं द्वितीयक तथ्य सामाग्री के संकलन हेतु दस्तावेजी अध्ययन स्त्रोतों यथ विभागीय वार्षिक प्रशासकीय प्रतिवेदन, पूर्ववर्ती अध्ययन व शोध रिपोर्ट व इंटरनेट व अखवारों के माध्यम से तथ्य संकलन कर शोधकार्य पूरा किया गया है।

10. रीवा संभाग का सामान्य परिचय

रीवा संभाग भारत के मानचित्र में 24°32′ उत्तरी अक्षांश तथा 81°24′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 1045 फिट है। इस नगर के दक्षिण–पूर्व की ओर बिछिया और दक्षिण–पश्चिम से आती हुई बीहर नदी है। रीवा संभाग पूर्व रीवा रियासत की राजधानी रहा है। 4 अप्रैल 1948 को रीवा स्टेट तथा बुन्देलखण्ड की 34 रियासतों को मिलाकर विन्ध्य प्रदेश का निर्माण किया गया था। उस समय इस नगर को नवनिर्मित प्रदेश की राजधानी बनने का गौरव प्राप्त हुआ था। 01 नवम्बर 1956 को जब मध्य प्रदेश का निर्माण हुआ तब इस नगर को सम्भागीय मुख्यालय का दर्जा प्राप्त हुआ।

11. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी क्रमांक 1: शासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में सामाजिक अभिप्रेरकों का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

वर्ग.अन्तराल (c-i)	0–10	10–20	20–30	30–40	40–50	50–60	60–70	70–80	80–90	90–100	योग
छात्र	0	0	5	21	70	136	114	29	17	8	400
छात्रा	0	0	4	19	68	134	116	31	18	10	400

सार्थक हेतु सारणी

छात्र समूह	छात्रों की संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	अनुपात
छात्र	400	58.20	12.93	–0.71
छात्रा	400	58.85	13.06	

$d.f = (N_1-1) + (N_2-1)$
$= (400-1) + (400-1)$
$= 399 + 399$
$= 798$

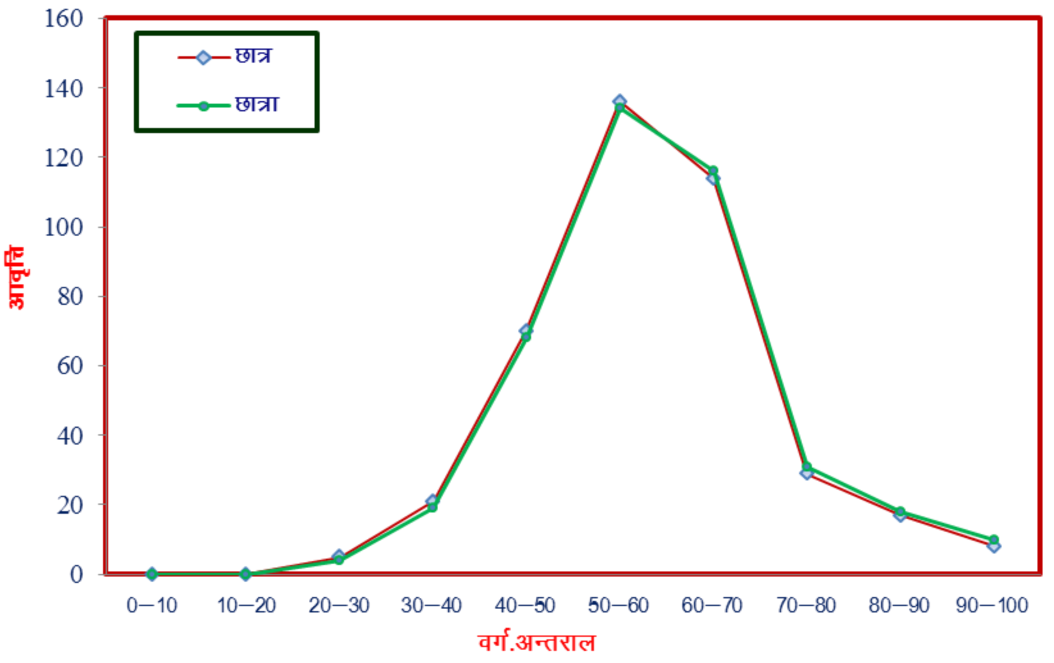

आरेख क्र. 1 : शासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में सामाजिक अभिप्रेरकों का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

12. विश्लेषण

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 मे न्यादर्श में शासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में सामाजिक अभिप्रेरको का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी क्रमांक 1 मे संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालयों के छात्रों में सामाजिक अभिप्रेरको का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव पर पड़ने वाले प्रभाव का औसत उपलब्धि 58.20 है तथा मानक विचलन 19.23 है। छात्राओं में सामाजिक अभिप्रेरको का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का औसत उपलब्धि 58.85 है तथा मानक विचलन 13.06 है।

शासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में सामाजिक अभिप्रेरको का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनो समूहों की औसत उपलब्धि मे अंतर की गणना से प्राप्त ज का मान –0.71 है।

13. व्याख्या

798d.f. पर सार्थकता के लिए ' t ' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि गणना से प्राप्त ' t ' का मान –1.59 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है। अतः शासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में सामाजिक अभिप्रेरको का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

सारणी क्रमांक 2: अशासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में सामाजिक अभिप्रेरकों का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

वर्ग.अन्तराल (c-i)	0–10	10–20	20–30	30–40	40–50	50–60	60–70	70–80	80–90	90–100	योग
छात्र	0	3	8	23	97	114	111	29	13	2	**400**
छात्रा	0	2	5	17	92	116	118	31	16	3	**400**

सार्थक हेतु सारणी

छात्र समूह	छात्रों की संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	अनुपात
छात्र	400	55.93	13.05	–1.48
छात्रा	400	57.28	12.75	

$d.f = (N_1-1) + (N_2-1)$
$= (400-1) + (400-1)$
$= 399 + 399$
$= 798$

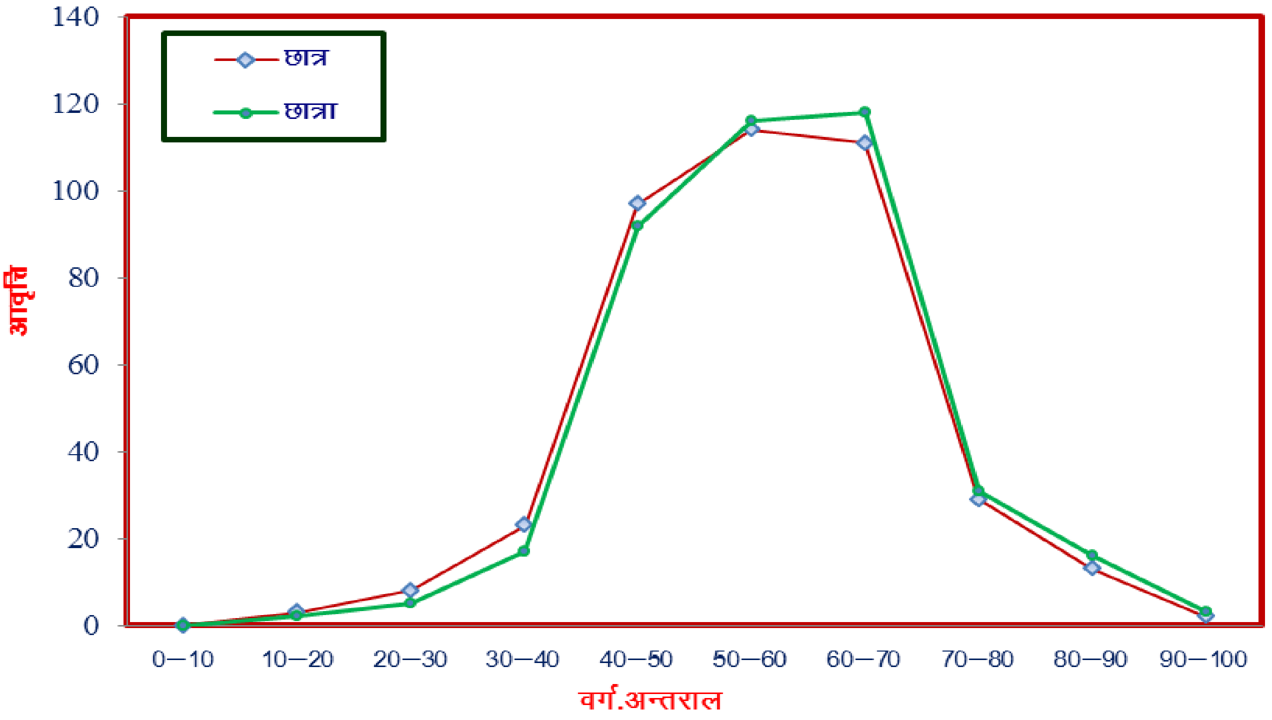

आरेख क्र. 2 : अशासकीय विद्यालयों के छात्र—छात्राओं में सामाजिक अभिप्रेरकों का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

14. विश्लेषण

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में अशासकीय विद्यालयों में के छात्र—छात्राओं में सामाजिक अभिप्रेरको का शैक्षणिक उपलब्धि से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी क्रमांक 2 मे संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि अशासकीय विद्यालय के छात्रों में सामाजिक अभिप्रेरको का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव पर पड़ने वाले प्रभाव का औसत उपलब्धि 55.93 है तथा मानक विचलन 13. 05 है। छात्राओं में सामाजिक अभिप्रेरको का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का औसत उपलब्धि 57.28 है तथा मानक विचलन 12.75 है। अशासकीय विद्यालयों में के छात्र—छात्राओं में सामाजिक अभिप्रेरको का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनो समूहों की औसत उपलब्धि मे अंतर की गणना से प्राप्त ज का मान —1.48 है।

15. व्याख्या

798d.f. पर सार्थकता के लिए ' t ' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि गणना से प्राप्त ' t ' का मान 2.05 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों के मध्य है। अतः अशासकीय विद्यालयों में के छात्र—छात्राओं में सामाजिक अभिप्रेरको का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

16. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि रीवा संभाग के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र—छात्राओं में सामाजिक अभिप्रेरको का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

17. संदर्भ

1. ओल्पोर्ट, जी.डब्ल्यू : 'व्यक्तित्व' ए साइकोलोजीकल इन्टरपरिटेशन, न्यूयार्क : हाल्ट, 1937.
2. खान, प्रो. एस. एच. और श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य, अध्यापकीय दर्शिका : परिवेशीय अध्ययन—कक्षा 1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली (भारत), 1987, पृष्ठ 44.
3. कौल लोकेश : शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली, 1998.
4. मूज, आर. : 'सोशल इकोलॉजी, मल्टी डाइमेन्सनल स्टडीज ऑफ ह्यूमन्स एण्ड ह्यूमन मिल्यूज इन हैम्बर्ग डी. एण्ड ब्रोडी, के (एडीटर्स) फ्रन्टीयर्स ऑफ साइकोलाजी, वोल्यूम 6, अमेरिकन हैण्डबुक ऑफ साइकियाट्री बेसिक बोर्डस, न्यूयार्क, 1964; पृ.— 355—365.
5. थोर्प, एल.वी. और सैमुलर, ए.एम. : 'पर्सनेल्टी एण्ड इन्टर डिस्सपलीनरी एपरोज' न्यूयार्क : एन ईस्ट—वेस्ट एड., 1965.